स्फीतिक अन्तराल हमें यह भी बताता है कि मुद्रा प्रसार नियन्त्रित करने के लिए कुछ [illegible] करना आवश्यक है। इसके लिए प्रभावशील नीति-गत उपाय यही है कि आधिक्य बजट (Surplus-[illegible]) की नीति अपनायी जाय एवं करों की मात्रा बढ़ायी जाय।

मुद्रा-स्फीति के रूप या प्रकार
(TYPES OF INFLATION)

मुद्रा-स्फीति के अनेक रूप हैं जिनमें से मुख्य का विवेचन नीचे किया जा रहा है :

(1) **चलन स्फीति** (Currency Inflation)—जब देश में मुद्रा की मात्रा बढ़ जाने से [illegible] होती है, तो इसे चलन स्फीति कहते हैं। चलन स्फीति प्रायः केन्द्रीय बैंक द्वारा अधिक कागजी [illegible] डालने से उत्पन्न होती है। इस प्रकार की स्फीति का प्रभाव वस्तुओं के मूल्यों पर तत्काल पड़ता है।

(2) **साख स्फीति** (Credit Inflation)—जब देश के व्यापारिक बैंक तीव्र गति से रकम [illegible] लगते हैं तो वस्तुओं की मांग में बहुत अधिक वृद्धि होती है। इसके प्रभाव से भी मूल्यों में वृद्धि [illegible] है। साख स्फीति प्रायः ब्याज की दर कम करने या ऋण नीति में उदारता बरतने के कारण होती है।

(3) **लागत प्रोत्साहित स्फीति** (Cost-induced or Cost-push Inflation)—कभी-कभी [illegible] उत्पादन लागत बढ़ जाती है जिससे उन वस्तुओं को खरीदने के लिए सरकार को अधिक धन [illegible] पड़ता है। अनेक बार देखा गया है कि सरकार को बहुत-सी योजनाओं पर पूर्व-निर्धारित से अधिक [illegible] करनी पड़ती है जिसका परिणाम मुद्रा-स्फीति होता है।

(4) **मांग प्रोत्साहित स्फीति** (Demand-pull Inflation)—जिन देशों में जनसंख्या तीव्र गति से [illegible] है वहां वस्तुओं तथा सेवाओं की मांग अत्यधिक तीव्रता से बढ़ती है। इससे मूल्यों में वृद्धि होती है और [illegible] का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पड़ता है क्योंकि मुद्रा की सक्रियता या गति बहुत तीव्र हो जाती है। इस [illegible] के फलस्वरूप देश में अधिक मुद्रा चलन में डालनी पड़ती है और मूल्य बढ़ते चले जाते हैं।

(5) **उत्पादन-जनित स्फीति** (Production-based Inflation)—कभी-कभी मानसून असफल होने [illegible] पड़ने, अन्य किसी कारण से फसल नष्ट होने, अथवा हड़ताल, आदि के कारण उत्पादन में कमी [illegible] है। इसके प्रभाव से भी मूल्यों में वृद्धि होती है और स्फीति की स्थिति दिखलाई देने लगती है।

(6) **हीनार्थ-प्रोत्साहित स्फीति** (Deficit induced Inflation)—आधुनिक प्रजातन्त्रवादी सरकारें [illegible] आर्थिक विकास के लिए बड़ी-बड़ी रकमें खर्च करती हैं। इतनी बड़ी रकमों को करों द्वारा या कभी-कभी [illegible] द्वारा पूरा करना भी सम्भव नहीं होता, अतः घाटे के बजट बनाए जाते हैं जिनमें आय कम और खर्च [illegible] दिखलाया जाता है। इस घाटे की पूर्ति नए नोट छाप कर की जाती है। पॉल ईजिग ने इस प्रकार की [illegible] को **बजटीय स्फीति** (Budgetary inflation) कहा है। यह घाटे की पूर्ति के कारण उत्पन्न होती है, [illegible] हीनार्थ-प्रोत्साहित स्फीति भी कहा जाता है।

(7) **पूर्ण स्फीति तथा आंशिक स्फीति** (Full Inflation and Partial Inflation)—प्रो. पीगू ने [illegible] के दो भेद किए हैं : पूर्ण स्फीति तथा आंशिक स्फीति। उनके अनुसार पूर्ण रोजगार की अवस्था के [illegible] अर्थव्यवस्था में मुद्रा की मात्रा बढ़ाई जाती है तो इसके कारण कीमत स्तर में जो वृद्धि होती है उसे [illegible] स्फीति या मुद्रा प्रसार कहते हैं। किन्तु पूर्ण रोजगार के बाद भी यदि मुद्रा की मात्रा बढ़ाई जाती है [illegible] मुद्रा-प्रसार बढ़ने लगता है क्योंकि यह मुद्रा की अतिरिक्त मात्रा कीमतों को बढ़ाने में प्रयुक्त होती है [illegible] पूर्ण स्फीति कहते हैं।

(8) **अधि-विनियोग स्फीति** (Over-investment Inflation)—जब किसी देश में साहसियों द्वारा [illegible] गति से पूंजी विनियोग आरम्भ हो जाता है तो अकस्मात स्फीति की स्थिति पैदा होती है क्योंकि जब [illegible] के बदले मशीनें, मकान या कच्चा माल खरीदा जाता है तो नकद रकम चलन में बढ़ती है। यदि पूंजी [illegible] ऐसी योजनाओं में किया जाय जिनमें उत्पादन शीघ्र होता है, तो स्फीति का वातावरण बहुत थोड़े समय [illegible] है क्योंकि अतिरिक्त मुद्रा को अतिरिक्त उत्पादन जज्ब कर लेता है। किन्तु देर में फल देने वाली [illegible] में धन विनियोग करने से स्फीति को अधिक प्रोत्साहन मिलता है।

(9) **अवमूल्यन-जनित स्फीति** (Inflation through Devaluation)—जिन देशों में मुद्रा का अवमू[illegible] किया जाता है उनमें प्रायः माल के निर्यात की मात्रा बढ़ जाती है, अतः उस देश में जनता के लिए [illegible] कम माल उपलब्ध होता है। इसके फलस्वरूप वस्तु-मूल्यों में वृद्धि आरम्भ हो जाती है।

(10) **लाभ स्फीति** (Profit Inflation)—युद्धकाल में प्रायः ऐसा होता है कि उत्पादित या निर्मित माल के मूल्य बढ़ जाते हैं जबकि कच्चे माल के मूल्यों में उतनी वृद्धि नहीं होती। अतः पूंजीपतियों को अप्रत्याशित लाभ होते हैं। इन लाभों का तत्काल नए क्षेत्रों में विनियोग भी नहीं हो सकता क्योंकि मशीनें आदि मिलना कठिन रहता है। अतः पूंजीपतियों द्वारा वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग अधिक किया जाता है जिसके परिणामस्वरूप मूल्यों में वृद्धि होने लगती है। यही स्फीति का कारण बन जाता है।

(11) **खुली तथा दबी हुई मुद्रा-स्फीति** (Open and Suppressed Inflation)—यदि समाज की बढ़ती हुई मांग के उपयोग पर कोई नियन्त्रण नही लगाए जायं तो यह खुली मुद्रा-स्फीति कहलाती है। किन्तु, यदि उपभोग की मात्रा पर नियन्त्रण लगा दिया जाय तो यह दबी हुई मुद्रा-स्फीति कहलाती है। सरकार प्रायः युद्धकाल के समय में मूल्य नियन्त्रण तथा राशन व्यवस्था द्वारा खुली स्फीति को नियन्त्रित करने का प्रयत्न करती है।

निष्कर्ष—मुद्रा-स्फीति के विभिन्न रूपों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि **मुद्रा-स्फीति के अधिकांश रूप सरकारी नीतियों से उत्पन्न होते हैं।** कुछ रूप प्राकृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक तत्वों के कारण प्रकट होते हैं। इन सभी तत्वों को नियन्त्रित रखने से स्फीति के कष्टदायक प्रभाव को कम किया जा सकता है।

मुद्रा-स्फीति की तीव्रता

तीव्रता की दृष्टि से मुद्रा-स्फीति की तीन स्थितियां या चरण हो सकते हैं :

(1) **रेंगती हुई या साधारण स्फीति** (Creeping Inflation)—अर्थशास्त्रियों द्वारा यह मान लिया गया है कि यदि मुद्रा की मात्रा में 2 प्रतिशत या उससे कम वार्षिक की वृद्धि हो, तो इसे रेंगता हुआ मुद्रा प्रसार कहेंगे। इस गति से होने वाली मुद्रा-स्फीति को साधारण अथवा स्वाभाविक माना जाता है जिससे किसी प्रकार की हानि होने की सम्भावना नहीं है, किन्तु यह स्पष्ट है कि यदि यही अवस्था चलती रही तो 25 वर्षों में कीमतें 50 प्रतिशत बढ़ जाती हैं।

(2) **चलती हुई स्फीति** (Moving or Walking Inflation)—यदि साधारण मुद्रा-प्रसार पर नियन्त्रण नहीं रखा जाता तो यह चलते हुए मुद्रा-प्रसार में परिवर्तित हो जाता है जिसमें तीव्र गति से कीमतें बढ़ने लगती हैं। इसमें कीमतों की वृद्धि लगभग 5 प्रतिशत होती है। इस प्रकार की मुद्रा-स्फीति में आर्थिक स्थिति धीरे-धीरे सामान्य जनता के लिए कष्टदायक होने लगती है और जनता ऐसा महसूस करने लगती है मानो उसकी जेब कोई अदृश्य जेबकतरा काट रहा है।

(3) **भागती हुई स्फीति** (Runway Inflation)—यदि चलते हुए मुद्रा-प्रसार पर भी नियन्त्रण नहीं लगाया जाता तो यह भागते हुए मुद्रा-प्रसार में परिवर्तित हो जाता है जिसमें कीमतें अधिक तेजी से कीमतें बढ़ने लगती हैं अर्थात् इस अवस्था में कीमतों की वृद्धि लगभग 10 प्रतिशत होती है।

(4) **तीव्रगामी या सरपट दौड़ती हुई स्फीति** (Galloping or Hyper Inflation)—जब मुद्रा-स्फीति की वार्षिक दर 15 प्रतिशत अथवा उससे अधिक हो जाए तो उसे सरपट या तीव्रगामी मुद्रा-स्फीति कहते हैं। इस प्रकार की मुद्रा-स्फीति किसी देश की अर्थव्यवस्था को कुछ समय के लिए ही डावांडोल कर देती है क्योंकि वस्तुओं के मूल्यों में प्रतिदिन ही नहीं, कभी-कभी प्रति घण्टे वृद्धि होती है। जिसका परिणाम यह होता है कि देश की मूल्य व्यवस्था छिन्न-भिन्न होने लगती है, जनता का मुद्रा पर से विश्वास हटने लगता है और सर्वत्र अशान्ति एवं असन्तोष (discontent) का वातावरण छा जाता है।

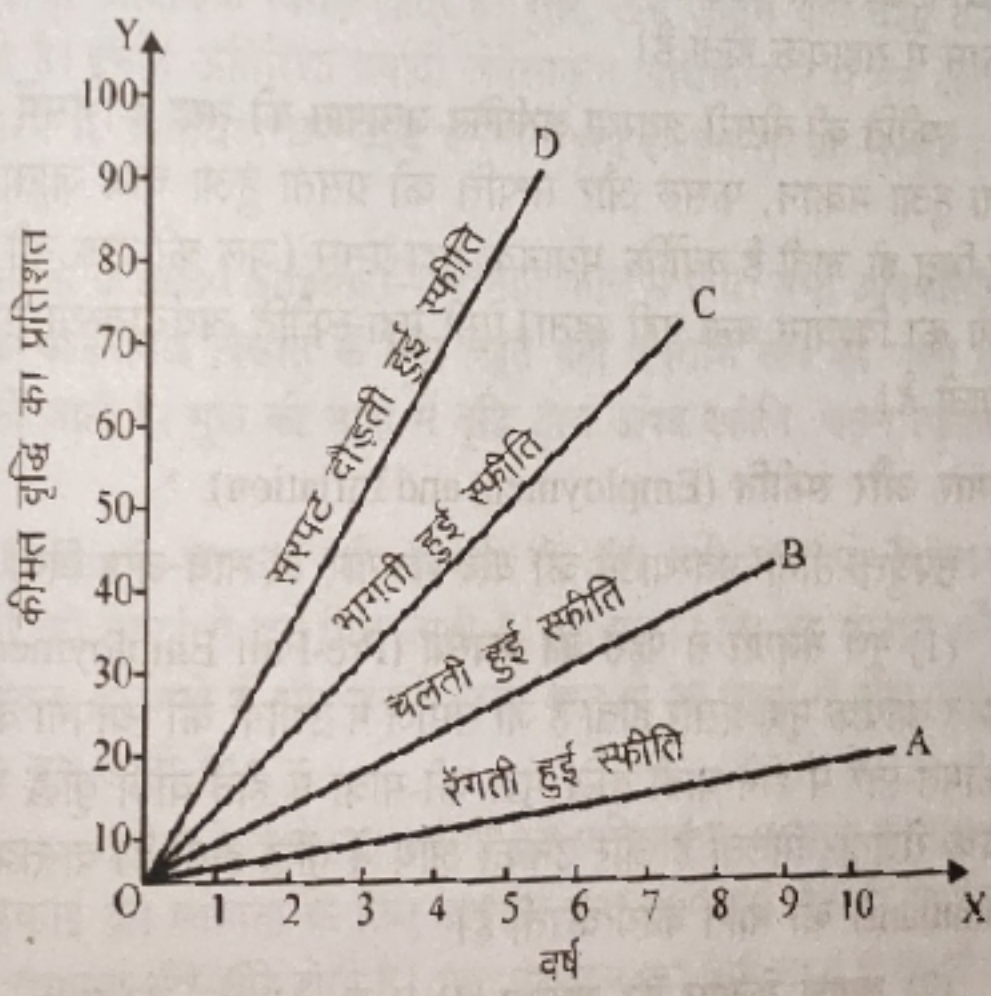

चित्र 2

रेखाचित्र द्वारा स्पष्टीकरण

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर चारों प्रकार की स्फीति को रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। रेखाचित्र 2 में OX-अक्ष पर वर्ष तथा OY-अक्ष पर कीमत वृद्धि का प्रतिशत दिखाया गया है। OA रेंगती हुई स्फीति है जहां 10 वर्ष में कीमत 20 प्रतिशत बढ़ी है। OB चलती हुई स्फीति है जहां 6 वर्षों में कीमत 40 प्रतिशत बढ़ी है। OC भागती हुई स्फीति है जहां 6 वर्षों में कीमत 60 प्रतिशत बढ़ी है। OD सरपट दौड़ती स्फीति है जहां 4 वर्षों में कीमतों में 70 प्रतिशत वृद्धि हुई है।

मुद्रा-स्फीति की अवस्थाएं
(STAGES OF INFLATION)

जिस प्रकार मनुष्य के शरीर को क्षय रोग (टी.बी.) धीरे-धीरे जर्जर बनाने लगता है उसी प्रकार मुद्रा-स्फीति भी आर्थिक शरीर को निर्बल बनाती रहती है। मुद्रा-स्फीति की भी क्षय की भांति ही तीन अवस्थाएं बताई गई हैं, यथा—**प्रथम अवस्था** में मुद्रा की मात्रा केवल रेंगती हुई आगे बढ़ती है जिसे सामान्य प्रयत्नों से नियन्त्रित किया जा सकता है। **दूसरी अवस्था** में मुद्रा-स्फीति चलने लगती है और उसे नियन्त्रित करने के लिए विशेष प्रयत्न आवश्यक होते हैं। क्षय रोग की भांति ही मुद्रा-स्फीति की **तीसरी अवस्था सरपट भागने की अवस्था** है जिसे नियन्त्रित करना प्रायः असम्भव होता है। इस अवस्था से पुरानी मुद्रा को ही समाप्त कर देना पड़ता है और उसके बदले नई मुद्रा प्रचलित की जाती है।

मुद्रा-स्फीति की अवस्थाएं जल वृष्टि से तुलना योग्य

वास्तव में, मुद्रा-स्फीति की तुलना क्षय रोग (T.B.) से करना उचित नहीं है क्योंकि मुद्रा-स्फीति की पहली अवस्था प्रायः विकास के लिए लाभदायक होती है जबकि क्षय तो शरीर को खाता रहता है। मुद्रा-स्फीति की तुलना **जल वृष्टि से की जानी चाहिए।** जिस प्रकार अविकसित **सूखे क्षेत्र** में प्रारम्भिक वर्षा सुखद और फलदायक होती है उसी प्रकार प्रारम्भिक मुद्रा-स्फीति विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए पूंजी का प्रबन्ध करती है जिससे जनता को रोजगार मिलता है, उत्पादन में वृद्धि होती और आर्थिक सम्पन्नता का वातावरण बनने लगता है।

मुद्रा-स्फीति की दूसरी अवस्था **मूसलाधार वर्षा की भांति** है जिससे कुछ क्षेत्रों को टूट-फूट से हानि होती है, किन्तु वर्षा का जल पीने का पानी, पशुओं के लिए घास तथा खेती की जल सम्बन्धी समस्या का सुखद समाधान कर देता है। इस अवस्था में लाभ और कष्ट दोनों होते हैं। इस प्रकार की मुद्रा-स्फीति भी आर्थिक विकास में सहायक होती है।

स्फीति की तीसरी अवस्था **असीमित जलापात की तरह** है जिसमें वर्षा का जल भयानक बाढ़ के रूप में बहता हुआ मकान, फसल और सम्पत्ति को ग्रसता हुआ चला जाता है। इस स्थिति में अर्थव्यवस्था पूर्णतः छिन्न-भिन्न हो जाती है क्योंकि भयानक मुद्रा-प्रसार (जल की बाढ़ की भांति) के कारण मुद्रा या प्रशासन पर किसी का विश्वास बना नहीं रहता। ऐसी मुद्रा-स्फीति अर्थव्यवस्था तथा जन-जीवन को अत्यधिक नुकसान पहुंचाती है।

रोजगार और स्फीति (Employment and Inflation)

उपर्युक्त तीनों अवस्थाओं को यदि रोजगार के साथ जोड़ दिया जाय तो स्थिति और स्पष्ट हो जाती है।

(1) **पूर्ण रोजगार से पहले की अवस्था** (Pre-Full Employment Stage)—इस अवस्था में प्रायः 2-3 प्रतिशत वार्षिक मुद्रा-प्रसार होता है जो समाज में उद्योगों की स्थापना के लिए लाभदायक होता है। इस अवस्था में कीमत-स्तर में होने वाली वृद्धि मुद्रा की मात्रा में होने वाली वृद्धि से कम अनुपात में होती है। जनता को अधिक रोजगार मिलता है और उनकी आय में वृद्धि होती है। वास्तव में यह मुद्रा-स्फीति एक उत्साहवर्द्धक (Stimulant) की भांति कार्य करती है।

(2) **सम्पूर्ण रोजगार की अवस्था** (Full Employment Stage)—पहली अवस्था में मुद्रा की मात्रा में जो वृद्धि होती है वह धीरे-धीरे बढ़ती जाती है। मान लिया पहली अवस्था में 3 प्रतिशत मुद्रा-स्फीति हुई, जनता की आय में 3 प्रतिशत वृद्धि हुई जिससे वस्तुओं तथा सेवाओं की मांग में वृद्धि हो गई। कीन्स के गुणक सिद्धान्त के अनुसार अविकसित क्षेत्रों में प्रायः रोजगार और मांग अधिक तीव्र गति से बढ़ते हैं, अतः

की 3 प्रतिशत वृद्धि धीरे-धीरे नई मुद्रा की मांग करती हुई 9-10 प्रतिशत तक बढ़ सकती है। धीरे-धीरे उत्पादन अधिक तेजी से बढ़ता है और अन्ततः सम्पूर्ण रोजगार की स्थिति आ जाती है। रोजगार की अवस्था आ जाने पर जितनी नई मुद्रा चलन में आती है वह आगे मांग में वृद्धि जाती, अतः उत्पादन की क्रिया रुक जाती है और धीरे-धीरे मूल्यों में तेजी से वृद्धि होने लगती है।

(3) **पूर्ण रोजगार के बाद की अवस्था** (Post Full Employment Stage)—मुद्रा-स्फीति जब तेजी से और पूर्ण रोजगार की स्थिति आ जाती है तो बाद में जितनी मुद्रा बढ़ती है वह मूल्यों में वृद्धि करती है क्योंकि उत्पादन बढ़ने का क्रम रुक जाता है। अतः मुद्रा-प्रसार बहुत तेजी से होता है। अन्त मुद्रा को समाप्त कर नई मुद्रा ही चलन में डालना आवश्यक हो जाता है।

निष्कर्ष—मुद्रा-स्फीति की चरम सीमा सरकारी शिथिलता एवं गलत नीतियों के कारण आती है, अतः के चक्र को समय रहते हस्तक्षेप द्वारा रोकना चाहिए।

मुद्रा-स्फीति के कारण
(CAUSES OF INFLATION)

किसी देश में मुद्रा-स्फीति को प्रभावित करने वाले कारणों को दो भागों में बांटा जा सकता है : सरकारी नीति से उत्पन्न स्फीति, (ब) अन्य कारण। इन दोनों वर्गों के कारणों पर अलग-अलग विचार अधिक उपयुक्त होगा।

सरकारी नीति (Policy of Government)

मुद्रा-स्फीति का मुख्य कारण सरकार की आर्थिक नीति होती है। इस नीति में प्रायः मुद्रा की मात्रा को करने वाली बातें निम्नलिखित हो सकती हैं :

(1) **हीनार्थ प्रबन्धन** (Deficit Financing)—युद्धकाल में या नियोजन युग में प्रायः सरकार का व्यय अधिक बढ़ जाता है, उसकी पूर्ति कर लगाकर या ऋण लेकर नहीं की जा सकती। अतः सरकार के में घाटा रहता है जिसे आवश्यक मात्रा में नोट छापकर पूरा किया जाता है। इसे आर्थिक भाषा में प्रबन्धन (Deficit Financing) कहा जाता है और इसके परिणामस्वरूप बाजार में नोटों की मात्रा में हो जाती है जिससे मुद्रा-स्फीति की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

(2) **युद्धजनित आर्थिक दबाव** (War-created Economic Pressures)—**युद्धकालीन आर्थिक दबाव सभी देशों में मुद्रा-स्फीति का कारण रहा है परन्तु हारने वाले देशों में स्फीति अत्यधिक हुई है** क्योंकि एक हारने वाले देशों में उत्पादन का सारा ढांचा अत्यधिक बिगड़ जाता है; **दूसरे**, उन्हें जीतने वाले देशों को के रूप में बहुत राशि चुकानी पड़ती है। इनके अतिरिक्त बर्बादी अपेक्षाकृत अधिक होने से उन देशों तथा व्यवसाय की पुनर्स्थापना करने में अत्यधिक धन व्यय करना पड़ता है। इन सबका सामूहिक मुद्रा-स्फीति के रूप में प्रकट होता है।

(3) **विकासजनित दबाव** (Development-created Strains)—वर्तमान काल में प्रायः सभी **अविकसित में मुद्रा-स्फीति का वातावरण है क्योंकि योजनाबद्ध विकास के लिए बहुत बड़ी धनराशि खर्च की जाती है की पूर्ति मुद्रा की मात्रा में वृद्धि द्वारा की जाती है। मुद्रा की मात्रा में वृद्धि द्वारा उत्पन्न स्फीति, चलन स्फीति** (Currency inflation) **कहलाती है।**

(4) **व्यापार नीति** (Commercial Policy)—सरकार यदि विदेशों से आने वाले माल पर निरन्तर लगाए रखती है तो देश के उद्योगों को स्पर्द्धा से छूट मिल जाती है। इस प्रकार निरन्तर संरक्षण की में चलने वाले उद्योग शिथिल एवं निष्क्रिय हो जाते हैं और उनमें उत्पन्न वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होती है जो देश में मुद्रा-स्फीति का कारण बन जाती है।

(5) **उद्योग नीति** (Industrial Policy)—अनेक देशों में नए उद्योगों की स्थापना पर सरकार का कड़ा रहता है। प्रत्येक नई औद्योगिक इकाई की स्थापना के लिए लाइसेंस लेना अनिवार्य होता है जिसके नई औद्योगिक इकाइयों की स्थापना धीरे-धीरे होती है। अतः उत्पादन का क्रम बहुत ढीला और रहता है। माल का उत्पादन कम रहने से देश में मुद्रा-स्फीति की प्रवृत्तियां बलशाली हो जाती हैं।

(6) **सरकार की कर नीति** (Taxation Policy)—सरकार जब निर्मित माल पर उत्पादन कर लगाती है या आय-कर में निरन्तर वृद्धि करती चली जाती है तो एक ओर तो साहसी वृत्ति निरुत्साहित

होती है और दूसरी ओर वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें बढ़ने लगती हैं। इससे भी मुद्रा-स्फीति को प्रो मिलता है।

(7) **प्रशासन में शिथिलता** (Loose Administration)—यदि सरकारी प्रशासन शिथिल हो जनता की संग्रह प्रवृत्ति, घूसखोरी, जमाखोरी तथा अधिकाधिक लाभ कमाने की आदतों को प्रोत्साहन लगता है। इसलिए जमाखोरी के फलस्वरूप बाजार में माल की कृत्रिम कमी हो जाती है और स्फीति वातावरण बनने लगता है।

(ब) अन्य कारण (Other Causes)

सरकारी नीति के अतिरिक्त मुद्रा-स्फीति को निम्न अन्य कारण भी प्रोत्साहित करते हैं :

(1) **उत्पादन में शिथिलता** (Slackness in production)—जब किसी देश के उत्पादन में वृद्धि अथवा उत्पादन में गिरावट आ जाय और मुद्रा की मात्रा उतनी ही रहे तो मुद्रा-स्फीति की उत्पादन में शिथिलता के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं :

(i) किसी देश में **सूखा पड़ने या बाढ़ आने से** फसल नष्ट हो जाती है इससे उद्योगों को कच्चा मिलने में कठिनाई होती है।

(ii) औद्योगिक क्षेत्र में **हड़ताल या तालाबन्दी** से भी उत्पादन में गिरावट आती है।

(iii) कुछ उद्योगों में मशीनें पुरानी होने से उत्पत्ति ह्रास नियम लागू हो जाता है और उत्पादन हो जाता है।

(2) **लागत में वृद्धि** (Increase in costs)—**यह स्फीति वस्तु मूल्यों की वृद्धि के कारण होती है** **लागत-जनित स्फीति** (Cost-push inflation) **कहते हैं।** इसे अध्याय 34 में पृथक् रूप से समझाया गया

(3) **मांग में वृद्धि** (Increase in demand)—वस्तुओं की मांग में अत्यधिक वृद्धि होने से प्रसार की स्थिति उत्पन्न होती है। **वस्तुओं की मांग में अत्यधिक वृद्धि युद्धकाल में होती है।** जिन देशों में उत्पादन तीव्र गति से बढ़ती है उनमें भी प्रायः वस्तुओं की मांग तेजी से बढ़ती है और इस प्रकार जो मुद्रा-स्फीति होती है उसे मांग-वृद्धि-स्फीति (Demand-pull inflation) कहते हैं। इसका अध्याय 34 में पृथक् विवेचन किया गया है।

(4) **बैंकों की क्रियाएं** (Banking Activities)—जिन देशों में बैंकिंग व्यवस्था का समुचित विकास हो जाता है उनमें व्यापारिक बैंक न केवल सभी प्रकार के व्यवसाय अथवा उद्योगों के लिए धन की व्यवस्था करते हैं बल्कि स्कूटर, मोटरकार, धुलाई मशीन, रेफ्रीजरेटर, आदि उपभोक्ता सामान खरीदने के लिए उपभोक्ता-ऋण या उपभोक्ता साख (Consumer's Credit) की व्यवस्था करते हैं जिससे साख की मात्रा में वृद्धि होने लगती है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति बैंकों द्वारा दी गई सुविधाओं का अधिकाधिक लाभ उठाने के लिए उत्सुक रहता है। इस प्रकार साख की मात्रा में वृद्धि होने से **साख प्रसार** (Credit Inflation) की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

मुद्रा-स्फीति के प्रभाव
(EFFECTS OF INFLATION)

मुद्रा-स्फीति विभिन्न वर्गों को भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रभावित करती है। इससे कुछ समय तक आर्थिक प्रगति को बल तथा रोजगार-व्यवस्था को प्रोत्साहन मिलता है, परन्तु इसकी निरन्तर वृद्धि आर्थिक विकास की गति को शिथिल कर देती है। वास्तव में, मुद्रा-स्फीति का समाज के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। जिसका विवेचन निम्न प्रकार है :

आर्थिक प्रभाव (Economic Effects)

(1) **सामान्य जनता को कष्ट** (Disadvantage to General Public)—मुद्रा-स्फीति वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य में वृद्धि कर देती है जिससे सामान्य जनता को उपभोग के सब साधन महंगे मिलते हैं। बढ़ते हुए मूल्यों से सामान्य जनता में न केवल असन्तोष उत्पन्न होता है, बल्कि उन्हें सरकार की नीतियों पर अविश्वास होने लगता है। यह स्थिति किसी भी प्रजातान्त्रिक सरकार के लिए सुखद नहीं हो सकती।

(2) **उत्पादक वर्ग** (Producer Class)—मुद्रा-स्फीति से उत्पादक वर्ग को लाभ होता है क्योंकि कीमतों में वृद्धि के कारण इनके लाभ की मात्रा बढ़ जाती है। इसके प्रमुख कारण इस प्रकार हैं—**पहला कारण** यह है कि मुद्रा-स्फीति के कारण लोगों के हाथ में क्रय-शक्ति की मात्रा बढ़ जाती है जिससे वस्तुओं की